पुरोवाक्

भारतीय समाज में नारी की स्थिति में निरन्तर बदलाव होती रहती है। आज के संघर्षशील युग में जीनेवाली नारी भावुक नहीं। वह व्यवहारिक तथा अपनी स्थिति को पुरुष के समतुल्य बनाये रखने में सक्षम है। सामाजिक जीवन के यथार्थ चित्रण करनेवाले उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा का प्रमुख स्थान है। नारी जीवन की त्रासद स्थितियों का चित्रण करनेवाली उषा प्रियंवदा नारी जीवन की चुनौतियों का सामना करते हुए स्वयं एक चुनौती के रूप में उभरी है। नारी के बदलाव पर ज़ारे देनेवाली उनकी नारियाँ अपनी अस्तित्व की लड़ाई लडते हुए अंत में सफल हो पाती है। उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों में व्यक्ति और परिवार के माध्यम से अकेलापन, क्षणवाद, अतीत के मोह एवं कुण्डाओं का खुला चित्रण किया है।

उषा प्रियंवदा ने भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यता के क्षेत्र में नारी बदलाव का चित्रण करके नारी जागरण पर ज़ोर दिया है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की सुषमा से लेकर अपनी नियती का फैसला खुद लेनेवाली नारियों के चित्रण द्वारा लेखिका ने 'रुकेगी नहीं राधिका' में नारी स्वतंत्रता की आवाज़ राधिका के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'शेषयात्रा' के अनु के माध्यम से लेखिका ने यह स्थापित किया है कि स्त्री एवं पुरुष समान रूप से सामाजिक जीवन का आधार है। इस तरह लेखिका ने 'अंतर्वंशी' में वाना के माध्यम से आत्मनिर्भरता के साथ जीनेवाली नारी का चित्रण किया है। साथ ही साथ प्रेम की नवीन व्याख्या भी प्रस्तुत किया है। उसने 'भयाकबीर उदास' में अपनी शारीरिक विषमताओं पर जीत हासिल करके नए जीवन की शुरुआत करनेवाली स्वतंत्र नारी का चित्रण किया है। उनकी नारियाँ पुरुष का गुलाम नहीं है। उनमें सहन करने की क्षमता के साथ-साथ अत्याचारों के प्रति आवाज़ उठाने की शक्ति भी है। उनकी नारियों में

बाह्य स्तर पर नहीं आंतरिक स्तर पर भी बदलाव हुआ है। भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यता में रहकर अपनी रचनाओं में दोनों सभ्यताओं का चित्रण करनेवाली लेखिका की नारियों के मन में भारतीयता के प्रति लगाव हैं। मैं ने इस शोधकार्य में उषा प्रियंवदा के नारी पात्रों के अध्ययन से उनकी नारी संबन्धी क्रान्तिकारी अवधारण का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। उषा प्रियंवदा के नारी पात्र 'उषा प्रियंवदा की कहानियों में टूटते जीवन मूल्य का यथार्थ चित्रण', उषा प्रियंवदा की उपन्यास सृष्टि आदि विषयों पर शोध हो चुके हैं। लेकिन 'उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी के बदलते चेहरे' विषय पर शोध करने का यह पहला कदम है। अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है।

पहला अध्याय : भारतीय नारी पूर्व प्रेमचंद युग तक

दूसरा अध्याय : हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी प्रेमचंद युग से आज तक

तीसरा अध्याय : हिन्दी की महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी

चौथा अध्याय : रचनाकार उषा प्रियंवदा एवं उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी

पाँचवाँ अध्याय : उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी के बदलते चेहरे

अंत में उपसंहार है।

पहला अध्याय

भारतीय नारी-पूर्व प्रेमचंद युग तक

इस अध्याय में नारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए - प्रागैतिहासिक काल, वैदिक काल, उत्तरवैदिक काल, रामायण-महाभारत काल, स्मृतिकाल, बौद्धकाल, जैनकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल तक नारी जीवन में हुए बदलाव का चित्रण किया है। आधुनिक काल में नारी-शिक्षा के प्रचार तथा समाज सुधारकों के परिश्रम के फलस्वरूप नारी के पारिवारिक, वैवाहिक एवं शैक्षणिक बदलाव का अध्ययन मैं ने इसमें किया। साथ ही पूर्व प्रेमचंद युग के उपन्यासों की विशेषताओं का चित्रण करके ऐतिहासिक, पौराणिक, तिलस्मी, जासूसी, सामाजिक आदि उपन्यासों के अंतर्गत उपन्यासकारों की नारी जीवन संबन्धी दृष्टिकोण दिखाने का प्रयत्न किया है। परिवार, शिक्षा, प्रेम, विवाह, विधवा विवाह आदि पर नारी जीवन का संबन्ध उपन्यासकारों ने किस प्रकार किया है इसका वर्णन इसमें है। इस तरह इस अध्याय, देवी के स्थान प्राप्त नारी उपयोग की वस्तु बनने का चित्रण उपन्यासकारों ने किस प्रकार किया है इसकी खोज है। फिर भी पूर्व प्रमचंद युग के उपन्यासों में नारी सुधार की भावना को स्थान मिला है। विधवा की दयनीय दशा के चित्रण के साथ-साथ उनके सुधार, उनके विवाह का समर्थन आदि भी उपन्यासकारों ने किया है। प्रेम संबन्धी दृष्टिकोण में हुए बदलाव भी उपन्यासों से प्राप्त है। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव एवं शिक्षा का प्रचलन भी इस युग की नारियों को आगे बढाया।

दूसरा अध्याय

हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी प्रेमचंद युग से आज तक

इस अध्याय में मध्यवर्ग की परिभाषा देने के साथ प्रेमचंद युग में आकर नारी संबन्धी विचार में उपन्यासकारों के चिन्तन में हुए नारी शोषण एवं बदलाव का चित्रण करने का प्रयत्न किया है। साथ ही प्रेमचन्दोत्तर युग में आकर इन स्थितियों के अंतर्गत उपन्यासकारों ने नारी जीवन को किस प्रकार चित्रित किया है इसका अध्ययन किया है।

समाज सुधारकों के परिश्रम के फलस्वरूप शिक्षा का प्रचलन प्रेमचंद युग में तीव्र गति से हुआ। नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई। वह, पुरुष की सहयोगिनी है दासी नहीं। इस युग के उपन्यासकार प्रेम संबन्धों में भारतीय आदर्शों के अनुरूप आत्मसमर्पण चाहते हैं। नारी को विवाह संबन्धी विषय पर खुद निर्णय लेना अधिकार नहीं था। इस क्षेत्र में बदलाव लाने के उद्देश्य से उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में शिक्षित नारियों का चित्रण करके इसका विरोध किया। साथ ही अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि के दुष्परिणामों को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करके इसके विरुद्ध समाज को जागरूक बनाने की कोशिश भी इन्होंने की है। इस युग के उपन्यासकारों ने नारी की विधवा एवं वेश्या जीवन की दयनीय दशा का चित्रण एवं इनको सुधारने का परिश्रम किस प्रकार किया है इसका भी चित्रण इसमें हुआ। धन कमाकर स्वतंत्र रूप में जीवन बितानेवाली नारियों के चित्रण द्वारा उपन्यासकारों ने नारी स्वतंत्रता के लिए किस तरह आवाज़ उठाया है यह भी अंकित करने का प्रयत्न मैं ने इसमें किया।

प्रेमचन्दोत्तर युग में शिक्षा के क्षेत्र में हुई जागरण के कारण संयुक्त परिवार व्यवस्था का अंत हो गया। यह नारी स्वतंत्रता का कारण बन गया। नारी अपनी पुराने संस्कारों से मुक्ति पाना चाहा। वह अधिकारों के प्रति सचेत हुई। इस काल में प्रेम भी जीवन का अवश्य अंग बन गया। उपन्यासकारों ने प्रेम की पीडा या न्योच्छावर का चित्रण अपने उपन्यासों में किया। इस समय नारी को सती बनने की आवश्यकता नहीं हुई। उपन्यासकारों ने वेश्या समस्याओं के मार्ग ढूँढकर उसके जीवन को खुशी बनाने की कोशिश भी करते हैं। इस प्रकार प्रेमचंद युग से आज तक के उपन्यासों में नारी जीवन का चित्रण किस प्रकार हुआ है इसका विशद अध्ययन इस अध्याय में किया है।

तीसरा अध्याय

हिन्दी की महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी

इस अध्याय में लेखिकाओं के उपन्यासों में समाज में व्याप्त शोषण एवं कुप्रधाओं के शिकार बननेवाली नारियों तथा इस कुप्रधाओं के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाली जाग्रत नारी का चित्रण किस प्रकार किया है, इसका अध्ययन है। लेखिकाओं ने परिवार, शिक्षा, प्रेम, यौन संबन्ध, विवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन, आर्थिक पक्ष आदि के क्षेत्र में नारी की दयनीय दशा एवं इसके विरुद्ध हुई आवाज़ को चित्रित किया है।

शिक्षा के माध्यम से जाग्रत होकर नारी प्रगति के प्रति अग्रसर हो रही है। समाज के सभी क्षेत्रों में वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही है। नारी के प्रेम एवं यौन संबन्धी विचार में बदलाव आ गयी है। इस क्षेत्र में वह स्वतंत्रता की चाह करती थी। वह विवाह के पूर्व यौन संबन्ध स्थापित करने में तथा विवाह के बाद पर पुरुष संबन्ध स्थापित करने में हिचकती नहीं।

लेखिकाओं ने विवाह संबन्धी विषय पर नारी अधिकार का समर्थन किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में बहु विवाह, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह आदि का विरोध करने के साथ-साथ, प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह, विधवा विवाह आदि का प्रोत्साहन भी किया है। वे यह भी सिद्ध करना चाहती है कि दहेज प्रथा, बाल विवाह, संयुक्त परिवार का विघटन, सामाजिक परिस्थिति, आर्थिक स्थिति आदि के कारण ज्यादातर नारियाँ वेश्या बन गयी है।

चौथा अध्याय

रचनाकार उषा प्रियंवदा एवं उसके उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी

इस अध्याय में उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व, रचना संसार एवं उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी चरित्र पर अध्ययन किया है। उनके व्यक्तित्व को आधार बनाकर उनके जन्म तथा बचपन, परिवार, शिक्षा, नौकरी, साहित्यिक प्रेरणा आदि पर अध्ययन हुआ है। इसमें यह जानने का प्रयत्न किया है कि उनके जीवन दर्शन के रूपायित होने में तत्कालीन-परिस्थिति युगीन प्रभाव एवं अनुभव उनको कितना प्रभावित किया है। फिर उनके उपन्यासों एवं कहानी संग्रहों का अध्ययन हुआ है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास की सुषमा, मीनाक्षी, सुषमा की माँ, मिस शास्त्री, भौरी, 'रुकेगी नहीं राधिका' उपन्यास की राधिका, विद्या, 'शेषयात्रा' उपन्यास की अनु, दिव्या, 'अंतर्वंशी' उपन्यास की वाना, सरिका, क्रिस्तीन, अंजी, 'भया कबीर उदास' की लिली (यमन), लिली की माँ आदि के चित्रण द्वारा मध्य वर्गीय नारी के चरित्र दिखाने का प्रयत्न लेखिका ने किस प्रकार किया है। इसका अध्ययन इसमें हुआ है।

उषा प्रियंवदा ने देशी और विदेशी परिवेश में जीवन बिताने के कारण उनके उपन्यासों की नायिकाओं में भी दोनों सभ्यता का प्रभाव पाये जाते हैं। उन्होंने भारतीय शिक्षित नारी की दुविधा को अपनी रचनाओं की कथावस्तु बनाया है। नारी की कुंठा, तनाव, निराशा, हताशा एवं स्वतंत्र अस्तित्व की खोज को उपन्यासों की रचना का आधार बनाया है। उनकी उपन्यासों की नारियाँ शिक्षा प्राप्त आधुनिकता से ओत-प्रोत आत्मनिर्भर नारियाँ है। यह दिखाने का परिश्रम मैं ने इस अध्याय में किया है।

पाँचवाँ अध्याय

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी के बदलते चेहरे

इस अध्याय में उषा प्रियंवदा के उपन्यासों की मध्यवर्गीय नारी के बदलाव दिखाने का परिश्रम किया है। उनके उपन्यासों की नारियों के पारिवारिक, शैक्षिक, आर्थिक, वैवाहिक, यौन संबन्ध आदि क्षेत्र में हुए बदलाव के अध्ययन के साथ-साथ पाश्चात्य सभ्यता के कारण उनके जीवन में हुए प्रभाव का चित्रण किस प्रकार किया है इनकी खोज इसमें हुआ है। नारियाँ अबला नहीं सबला है। बदलाव की भूमिका निभानेवाली उनकी नारियों में प्रतिशोध की भावना विद्यमान है। जीवन में पुरुष एवं स्त्री को समान अधिकार की दावा करनेवाली उनकी नारियाँ दूसरों की आत्मपरिवर्तन का प्रेरक बनकर आन्तरिक शक्ति प्रकट करती है। समय एवं समाज के अनुरूप उनकी नारियाँ बदलाव की भूमिका निभाती है।

पुरुष के समान पारिवारिक दायित्व निभाने में उनकी नारियाँ सफल बन गयी है। पारिवारिक स्वतंत्रता की चाह करनेवाली उनकी नारियों में पारिवारिक तनाव एवं कुण्ठाओं के आगे सिर न झुकाकर आगे बढने की क्षमता है। उषा प्रियंवदा शिक्षा प्राप्ति में जितनी निपुणता दिखाई है उनकी नारियाँ भी ऐसी है। उनकी सभी नारियाँ शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनती है। उनके उपन्यासों की नायिकाएँ प्रेम भावना से मुक्त नहीं। उषा प्रियंवदा ने विवाह के पूर्व के प्रेम एवं यौन संबन्ध, विवाह के बाद के प्रेम एवं यौन संबन्ध तथा समलैंगिक संबन्धों का चित्रण उपन्यासों में प्रस्तुत करके आधुनिक मध्यवर्गीय नारी को इस क्षेत्र में हुए बदलाव को दिखाने का परिश्रम किया है।

उषा प्रियंवदा अपने उपन्यासों में वैवाहिक क्षेत्र में नारी स्वतंत्रता को महत्व देती है। विवाह संबन्धी निर्णय लेने का अधिकार नारी को है। शिक्षा प्राप्त उनकी नारियाँ कामकाजी एवं आत्मनिर्भर है। विदेश में रहने पर भी उनकी नारियों को देश के प्रति प्रेम भाव थी। इन सबका चित्रण उषा प्रियंवदा अपने उपन्यासों में किस प्रकार किया है, यह इस अध्याय में प्रस्तुत है।

उपसंहार

अंत में उपसंहार है। इसमें उषा प्रियंवदा की मध्यवर्गीय नारी के बदलाव पर अध्ययन करके इस निष्कर्ष पर पहूँच गया है कि उनकी नारियों के अंतरमन मन में स्वतंत्रता की चाह है। वह किसी के गुलाम बनकर जीना नहीं चाहती। आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा को अनिवार्य माननेवाली उनकी नारियों में पुरुष के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति भी विद्यमान थी। उनके उपन्यासों की मध्यवर्गीय नारी आधुनिकता की प्रवृत्तियों से प्रभावित है। उनकी नारियाँ भूतकाल में डूब हुए परंपरागत समाज के सामने नवीन चेतना से युक्त प्रगतिशील पथ प्रदर्शिक बन गयी है।

उषा प्रियंवदा अमेरिका में रह चुकी है और आधुनिकता तथा पश्चिमी जीवन संसार से परिचित भी है। उनके उपन्यासों के मध्यवर्गीय स्त्री चरित्र भी आधुनिकता की प्रवृत्तियों से प्रभावित रहीं। स्त्री के चेहरे के अंतर्गत उनके समस्त अस्तित्व, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक तेवरों में हुए बदलावों को पैनी दृष्टि से व्यापकता और स्वाभाविकता के साथ प्रत्यक्षीकृत करने में उषा प्रियंवदा ने सक्षकता हासिल की है। उनके उपन्यासों के मुख्य स्त्री-पात्रों की कथनियों और करनियों से यह स्पष्ट होता है कि ये नारी पात्र आमूलचूल परिवर्तित जीवन परिवेश के जीवन्त प्रतिस्वरूप रहे हैं। स्वतंत्र चेतना, स्वतंत्र व्यक्तित्व तथा नारीवादी विचार-संस्कार से ये नारीपात्र आधुनिक हिन्दी उपन्यास के इतिहास पर आलेखित रहेंगी। इनकी बुलंद आवाज़ में दकियानूसी समाज की जंजीरें तोडने की ताकत रखती है। बदले हुए चेहरे बदली हुई आत्मा के प्रतीक है। यह बदले हुए एक समाज का परिदृश्य भी है। उषा प्रियंवदा के ये नारी पात्र बाद में आए हुए कई प्रखर स्त्रीवादी उपन्यासों के नारी पात्रों की प्रतिछाया जैसे लगते हैं।